

मौर्य साम्राज्य और अशोक का धम्म

कक्षा 6 सामाजिक विज्ञान

Complete Study Notes

सीखने के उद्देश्य

मौर्य साम्राज्य के उदय तथा चंद्रगुप्त मौर्य, बिंदुसार और सम्राट अशोक के योगदान को समझें। मौर्य प्रशासन, अभिलेखों के महत्व, कलिंग युद्ध तथा अशोक के धम्म का अध्ययन करें। जानें कि अशोक ने शांति, धार्मिक सहिष्णुता और जनकल्याण के सिद्धांतों को पूरे साम्राज्य और अन्य देशों तक कैसे पहुँचाया।

मौर्य साम्राज्य का परिचय

मौर्य साम्राज्य भारत का पहला विशाल साम्राज्य था जिसने भारतीय उपमहाद्वीप के बड़े भाग को एक संगठित शासन व्यवस्था के अंतर्गत एकजुट किया। लगभग 2300 वर्ष पूर्व स्थापित इस साम्राज्य ने मजबूत प्रशासन, प्रभावी कर व्यवस्था, सुव्यवस्थित संचार तथा कानून व्यवस्था की नई परंपराएँ विकसित कीं।

मौर्य शासकों ने व्यापार को बढ़ावा दिया, सड़कों का निर्माण कराया, प्रशासन को संगठित किया और विशाल साम्राज्य में एकता बनाए रखी। इन शासकों में सम्राट अशोक का स्थान सबसे महत्वपूर्ण माना जाता है, क्योंकि उन्होंने युद्ध छोड़कर शांति और मानवता का मार्ग अपनाया।

चंद्रगुप्त मौर्य और साम्राज्य की स्थापना

चंद्रगुप्त मौर्य ने अपने गुरु और सलाहकार चाणक्य (कौटिल्य) की सहायता से नंद वंश को पराजित कर मौर्य साम्राज्य की स्थापना की। उनके नेतृत्व में भारत का पहला विशाल साम्राज्य अस्तित्व में आया।

चंद्रगुप्त के बाद उनके पुत्र बिंदुसार शासक बने। उनके पश्चात सम्राट अशोक ने शासन संभाला और मौर्य साम्राज्य को नई ऊँचाइयों तक पहुँचाया। मौर्य साम्राज्य पहले के राज्यों की तुलना में कहीं अधिक विशाल था, इसलिए इसके संचालन के लिए अत्यंत संगठित प्रशासन की आवश्यकता थी।

मौर्य प्रशासन

मौर्य साम्राज्य की राजधानी पाटलिपुत्र (वर्तमान पटना) थी, जो प्रशासन और शासन का प्रमुख केंद्र था।

इसके अतिरिक्त तक्षशिला और उज्जैन जैसे महत्वपूर्ण नगर व्यापार, प्रशासन और संचार के प्रमुख केंद्र थे। इन नगरों के माध्यम से साम्राज्य के विभिन्न क्षेत्रों का संचालन किया जाता था। साम्राज्य के सुचारु संचालन के लिए अनेक अधिकारियों की नियुक्ति की गई थी, जो कर संग्रह, कानून व्यवस्था, व्यापार, न्याय और सार्वजनिक कार्यों की देखरेख करते थे। विशाल सेना साम्राज्य की सुरक्षा सुनिश्चित करती थी।

राज्य और साम्राज्य में अंतर

राज्य सामान्यतः सीमित क्षेत्र वाला होता है, जबकि साम्राज्य अनेक राज्यों या प्रदेशों को मिलाकर बनाया जाता है। बड़े साम्राज्य के संचालन के लिए अधिक अधिकारियों, बड़ी सेना, प्रभावी कर व्यवस्था तथा मजबूत प्रशासन की आवश्यकता होती है।

मौर्य साम्राज्य ने इन सभी व्यवस्थाओं को सफलतापूर्वक विकसित किया, जिसके कारण वह लंबे समय तक संगठित और शक्तिशाली बना रहा।

अशोक के अभिलेख

सम्राट अशोक पहले ऐसे भारतीय शासक थे जिन्होंने अपने संदेश सीधे जनता तक पहुँचाने के लिए शिलालेखों और स्तंभलेखों का उपयोग किया। उन्होंने अपने आदेश और नैतिक संदेश पत्थरों तथा स्तंभों पर खुदवाए।

इन अभिलेखों का अधिकांश भाग प्राकृत भाषा में ब्राह्मी लिपि का उपयोग करके लिखा गया था, जिससे सामान्य लोग भी उन्हें समझ सकें। आज ये अभिलेख इतिहासकारों के लिए मौर्य प्रशासन और अशोक की नीतियों के महत्वपूर्ण स्रोत हैं।

कलिंग युद्ध

सम्राट अशोक के जीवन की सबसे महत्वपूर्ण घटना कलिंग युद्ध थी, जो वर्तमान ओडिशा के कलिंग राज्य के विरुद्ध लड़ा गया था। यद्यपि अशोक इस युद्ध में विजयी हुए, लेकिन युद्ध में हुई भारी जनहानि और विनाश ने उन्हें अत्यंत दुखी कर दिया।

उन्होंने महसूस किया कि युद्ध केवल पीड़ा और विनाश लाता है। इस अनुभव ने उनके जीवन की दिशा बदल दी और उन्होंने भविष्य में हिंसा का मार्ग त्यागने का निर्णय लिया।

अशोक का धम्म

नैतिक जीवन और कल्याण के नियम: कलिंग युद्ध के बाद अशोक ने बौद्ध धर्म की शिक्षाओं से प्रेरणा लेकर धम्म को अपनाया। उनका धम्म किसी नए धर्म की स्थापना नहीं था, बल्कि नैतिक जीवन जीने का एक मार्ग था।

उन्होंने लोगों को माता-पिता और बड़ों का सम्मान करने, पशुओं और सेवकों के प्रति दया रखने, सत्य बोलने, धार्मिक सहिष्णुता अपनाने तथा सभी धर्मों का सम्मान करने की शिक्षा दी। उनका विश्वास था कि एक शासक को अपनी प्रजा की देखभाल उसी प्रकार करनी चाहिए जैसे एक पिता अपने बच्चों की करता है। उनके धम्म के सिद्धांतों ने समाज में करुणा, सहिष्णुता, ईमानदारी, आत्म-अनुशासन और आपसी सम्मान को बढ़ावा दिया।

धम्म का प्रसार

अशोक ने अपने धम्म का प्रचार करने के लिए धम्म महामात्रों की नियुक्ति की। ये अधिकारी गाँव-गाँव जाकर लोगों को नैतिक जीवन, सदाचार और सामाजिक सद्भाव का संदेश देते थे।

उन्होंने अपने दूतों को श्रीलंका, सीरिया, मिस्र और यूनान जैसे देशों में भी भेजा ताकि शांति, सद्भाव और बौद्ध शिक्षाओं का प्रसार किया जा सके।

मौर्य साम्राज्य और अशोक का महत्व

मौर्य साम्राज्य ने यह सिद्ध किया कि विशाल क्षेत्रों का शासन संगठित प्रशासन और प्रभावी व्यवस्था से सफलतापूर्वक किया जा सकता है। सम्राट अशोक का युद्ध से शांति की ओर परिवर्तन विश्व इतिहास की सबसे प्रेरणादायक घटनाओं में से एक माना जाता है।

उनके शांति, करुणा, धार्मिक सहिष्णुता और जनकल्याण के सिद्धांत आज भी पूरे विश्व में प्रेरणा का स्रोत हैं। उनके अभिलेख और स्मारक प्राचीन भारतीय इतिहास के सबसे महत्वपूर्ण स्रोतों में गिने जाते हैं।

अभ्यास प्रश्न

1. मौर्य साम्राज्य की स्थापना किसने की?
2. मौर्य साम्राज्य की राजधानी का नाम क्या था?
3. अशोक के अभिलेखों का महत्व क्या है?
4. कलिंग युद्ध ने अशोक के जीवन को कैसे बदल दिया?
5. अशोक के धम्म के मुख्य सिद्धांत क्या थे?

उत्तर

- **उत्तर 1:** मौर्य साम्राज्य की स्थापना चंद्रगुप्त मौर्य ने अपने गुरु चाणक्य (कौटिल्य) की सहायता से की।
- **उत्तर 2:** मौर्य साम्राज्य की राजधानी पाटलिपुत्र (वर्तमान पटना) थी।
- **उत्तर 3:** अशोक के अभिलेख उनके प्रशासन, नीतियों तथा धम्म के सिद्धांतों की महत्वपूर्ण जानकारी प्रदान करते हैं।
- **उत्तर 4:** कलिंग युद्ध के विनाश और जनहानि को देखकर अशोक ने हिंसा का त्याग किया और शांति तथा धम्म के प्रचार में अपना जीवन समर्पित कर दिया।
- **उत्तर 5:** अशोक के धम्म के प्रमुख सिद्धांत थे—सत्य बोलना, बड़ों का सम्मान करना, सभी धर्मों का आदर करना, पशुओं और मनुष्यों के प्रति दया रखना तथा शांति और सद्भाव के साथ जीवन जीना।